Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

किरातार्जुनीयम् पर उपजीव्य ग्रन्थों का प्रभाव

दिनेश प्रताप मौर्य
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानित वि0वि0, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

शोध–सारः– रामायण, महाभारत तथा पुराण–साहित्य समस्त लौकिक–संस्कृत वाङ्.मय के उपजीव्य ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों से ही कथा–भावों को ग्रहण करके उत्तरवर्ती कवियों– महाकवियों ने अपनी यशःकाय स्वरूप कृतियों का सर्जन किया है। 6वीं शती ई0 के पुरोधा महाकवियों में अग्रगण्य तथा बृहत्त्रयी के प्रथम कवि भारवि ने भी इस परम्परा का अनुकरण करते हुए महाभारत तथा शिवमहापुराण के प्रसंगों एवं उपख्यानों को आधार बनाकर अष्टादशसर्गोपेत एक प्रशस्त महाकाव्य की सर्जना की। भारवि की कृति पर उसके उपजीव्य ग्रन्थों के प्रभाव का उद्घाटन ही प्रस्तुत शोध–पत्र का विवेच्य है।

मुख्य बिन्दु–भारवि, किरातार्जुनीयम्, महाभारत, शिवपुराण, नामकरण, कथानक, भाव–साम्य, भाषाशैली।

बृहत्त्रयी में सर्वप्रथम परिगणित महाकाव्य भारविकृत किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु व्यास विरचित 'महाभारत' के कथा प्रसंगों एवं 'शिवपुराण' के पौराणिक उपाख्यान पर आधारित है। अस्तु निस्सन्देह भारवि ने अपनी अप्रतिम साहित्यिक प्रतिभा एवं वैदुष्यपूर्ण प्रदर्शन के साथ ही महाभारतीय एवं पौराणिक शैली तथा स्वरूप को भी ग्रहण किया होगा। किरातार्जुनीयम् पर उसके उपजीव्य ग्रन्थों के प्रभावों को रेखांकित करना अत्यन्त श्रमसाध्य दुष्कर कार्य है। **'व्यासोच्छिष्टं जगत् सर्वम्'** यदि इस उक्ति को आधार माना जाए तो व्यासोत्तरवर्ती समस्त साहित्य महाभारत तथा पौराणिक ग्रन्थों से कथा एवं भाव का अधिग्रहण कर पल्लवित हुआ प्रतीत होता है। इस दृष्टि से व्यासोत्तरवर्ती समस्त महाकवियों पर इतिवृत्त एवं भावों के अधिग्रहण–दोष का आरोपण हो सकता है, इसलिए उनके वैदुष्य पर सन्देह होना निराधार नहीं है। तथापि जिस प्रकार आकाश से बरसने वाला जल एक ही वर्ण एवं स्वाद का होता है, किन्तु भूमि के वैविध्य एवं विशेषताओं के कारण वह अनेक वर्णों एवं विविध स्वाद वाला होता है, उसी प्रकार व्यासोत्तरवर्ती काव्यों में इतिवृत्त एवं भावों की साम्यता होने पर भी उनके प्रयोज्य, वाच्य तथा लेखन शैली में साहित्यिक वैविध्य एवं वैशिष्ट्य के कारण उक्त दोष का परिहार स्वतः ही हो जाता है। भारविकृत काव्य पर जिन दृष्टिकोण से महाभारत एवं पौराणिक शैली का प्रभाव पड़ा, उन्हें अधोंकित रूप में सूचीबद्ध किया जा सकता है–

1.**नामकरणः–** भारवि ने अपनी कृति के नामकरण हेतु जिस 'किरात' शब्द का महाभारत से ग्रहण किया है, वह कैरातपर्व से सम्बद्ध है। महाभारत में 'कैरात' शब्द का प्रयोग प्रथमतः 38 वें अध्याय के अन्त में तथा 39 वें अध्याय में बहुशः वर्णित है।

शिवपुराण में शंकर के किरातावतार वर्णन प्रसंग में पाण्डवों के द्वैतवन की कथा से प्रारम्भ कर अर्जुन द्वारा पाशुपत–अस्त्र–प्राप्ति तक की कथा वर्णित है। किरातार्जुनीयम् में भी यही वर्णन प्राप्त होता है। शिवपुराण में भी शंकर के किरात रूप में अर्जुन से युद्ध 'किरातावतारवर्णन प्रसंग' के अन्तर्गत वर्णित है। शिवपुराणोक्त किरातावतारवर्णन 'भिल्लार्जुनसंवाद' नामक अध्याय में उपनिबद्ध है।

निष्कर्षतः भारवि ने अपने काव्य के नामकरण में 'किरात' शब्द का अनुप्रयोग महाभारत एवं शिवपुराण के आधार पर किया, जो 'किरातार्जुनीयम्' पर उक्त ग्रन्थद्वय के प्रभाव को प्रमाणित करता है।

2.**कथानकः–** कथानक की दृष्टि से भी 'किरातार्जुनीयम्' महाभारत एवं शिवपुराण का आश्रयण लेता है। यद्यपि भारवि ने अन्याय प्रसंगों में वर्णन की दृष्टि से किंचित परिवर्तन अवश्य किया है, तथापि अपनी अभूतपूर्व साहित्यिक कल्पनाओं एवं वर्णन–चातुर्य के होते हुए भी मूलकथा में विक्षोभ नहीं उत्पन्न होने दिया। कथाक्रम की दृष्टि से अनुशीलन करने पर भी यही प्रमाणित होता है।

महाभारत में यह कथा द्वैतवन से प्रारम्भ होती है। तदुपर्यन्त द्रौपदी–युधिष्ठिर संवाद, भीम–युधिष्ठिर संवाद, व्यासमुनि का आगमन, अर्जुन द्वारा इन्द्रकील के प्रति प्रस्थान, अर्जुन–इन्द्र संवाद, अर्जुन द्वारा शिव की विकट तपस्या, मूकदानव वध, किरातार्जुन–युद्ध, भगवान शंकर का प्रसन्न होना तथा अर्जुन को पाशुपतास्त्र की प्राप्ति इत्यादि प्रसंग क्रमशः वर्णित हैं।

शिवपुराण में उपनिबद्ध उक्त कथा का कलेवर महाभारतोक्त कथा से किंचित विशाल है। पुराणोक्त कथा का श्री गणेश भी द्वैतवन में पाण्डवों के आगमन से ही होता है। तत्पश्चात् दुर्वासा का शिष्यों के साथ द्वैतवनागमन, द्रौपदी के आह्वान पर श्रीकृष्ण का आगमन, भील (गुप्तचर) प्रसंग, पाण्डवों की परस्पर वार्ता, व्यासमुनि का आगमन तथा अर्जुन को उपदेश, अर्जुन का यक्ष के साथ इन्द्रकील गमन, व्यासमुनि का पुनरागमन्, इन्द्र द्वारा अर्जुन को शिवमन्त्रोपदेश, अर्जुन की शिवतप में प्रवृत्ति, मूकदानव–वध, भिल्लार्जुनयुद्ध, अर्जुन को शिवरूप का दर्शन एवं पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति इत्यादि अन्यान्य प्रसंगों का क्रमशः उपनिबद्धन शिवपुराण में प्राप्त होता है।

महाकवि भारवि ने कुछ परिवर्तनों के साथ स्वकृति का कथाक्रम का इस प्रकार व्यवस्थित किया है–द्वैतवन में युधिष्ठिर–वनेचर–वार्ता से महाकाव्य का प्रारम्भ होता है। शिवपुराण में भी वनेचर (भील) का वर्णन पाण्डवों के साथ दृष्टव्य है। दुर्योधन के गुणों की परीक्षा हेतु प्रेषित पाण्डवों के समीप द्वैतवन में वापस आता है। किरातार्जुनीयम् में भी युधिष्ठिर द्वारा प्रेषित वनेचर द्वैतवन में आता है। पुनश्च् किरातार्जुनीयम् प्रोक्त द्रौपदी–युधिष्ठिर संवाद एवं भीम–युधिष्ठिर संवाद 'महाभारत' में भी प्राप्त होता है, शिवपुराण में यह प्रसंग पाण्डवों की परस्पर वार्ता के रूप में है। एक ओर जहाँ व्यासमुनि के आगमन एवं अर्जुन का इन्द्रकील के प्रति प्रस्थान का प्रसंग दोनों उपजीव्य ग्रन्थों से ग्रहीत है, वहीं दूसरी ओर अर्जुन का इन्द्रकील–गमन में यक्ष का साहचर्य 'शिवपुराण' से ग्रहण किया गया है। 'इन्द्रार्जुनसंवाद' में भी भारवि की यही प्रवृत्ति है। इसी प्रकार अर्जुन द्वारा शिव–तपस्या के प्रसंग में भी कवि ने उपजीव्य ग्रन्थों का अनुकरण किया है। इसी क्रम में किरातार्जुनीयम् में वर्णित मूकदानव–वध, किरात–अर्जुन युद्ध तथा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का प्रसंग भी महाभारत तथा शिवपुराण से साम्य रखते हैं। काव्यारम्भ में द्रौपदी वचन के अनन्तर इन्द्रकील गमन करते हुए अर्जुन कुछ कहे बिना ही प्रस्थान करते हैं। इस प्रसंग में भी 'किरातार्जुनीयम्' महाभारत एवं शिवपुराण का ऋणी है। अस्तु कथानक की दृष्टि से भी भारवि प्रणीत काव्य पर महाभारत एवं शिवपुराण का वर्णन–वैविध्य की दृष्टि से मिश्रित परोक्ष प्रभाव प्रतिबिम्बित होता है।

3.**भाव–साम्य एवं भाषाशैलीः–** ग्रन्थारम्भ में भारवि की भाषा शैली एवं भावाभिव्यक्ति पर महाभारतीय प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। किरातार्जुनीयम् में वर्णित द्रौपदी का प्रत्येक वचन महाभारत में वर्णित द्रौपदी के कथनों से साम्यता की स्पष्ट प्रतीति कराता है। वनपर्व में, युधिष्ठिर की दुर्दशा से चिन्तित द्रौपदी का कथन देखिए–

''इदं च शयनं दृष्ट्वा यच्चासीत् ते पुरातनम्।
शोचामि त्वां महाराज दुःखानर्हं सुखोचितम्।।''

अर्थात् ''महाराज! आपकी इस शय्या को देखकर मुझे राजोचित शय्या का स्मरण होता है और मैं शोकमग्न हो जाती हूँ, क्योंकि आप दुःख के अयोग्य एवं सुख के योग्य हैं।'' प्रकारान्तर से ऐसा ही भाव किरातार्जुनीयम् की द्रौपदी भी प्रकट करती है– ''पूर्वकाल में बहुमूल्य कोमल शय्या पर सोए हुए, प्रातःकाल में वैतालिकों द्वारा गाए गए मंगलाचरणों से जागने वाले आप अब कुशमयी भूमि पर सोए हुए, सियारों की अमंगलकारी ध्वनि से जागते हैं''–

''पुराधिरूढः शयनं महाधनं विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्.गलैः।
अदभ्रदर्भाधिशाय्य स स्थलीं जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः।।

भीम की दशा के वर्णन में भी किरातार्जुनीयम् की द्रौपदी महाभारत की द्रौपदी का अनुकरण करती जान पड़ती है।

''यो यानैरद्भुताकारैर्हयैर्नागैश्च संवृतः।
प्रसह्य वित्तान्यादत पार्थिवेभ्यः परन्तप।। एवं

''तं ते वनगतं दृष्ट्वा कस्मान्मन्युर्न वर्धते। इत्यादि वचन महाभारत में द्रौपदी ने युधिष्ठिर से अर्जुन की दशा व्यक्त करते हुए कहे हैं। ''जिन्होंने पराजित राजाओं द्वारा दिए गए अद्भुत आकार वाले रथों, घोड़ों एवं हाथियों से सम्पन्न असंख्य राजाओं से भी बलपूर्वक धन लिया अर्थात् राजाओं को पराजित करने वाले राजाओं को भी पराजित किया, उस अर्जुन को इस प्रकार वनवास का कष्ट झेलते देखकर भी शत्रुओं पर आपका क्रोध क्यों नहीं बढ़ता।''–ऐसा वर्णन महाभारत में प्राप्त होता है।

भारवि ने भी इसी प्रकार की भावसाम्यता प्रस्तुत की है। किरातार्जुनीयम् की द्रौपदी भी महाभारत सम्मत शैली का ही अनुकरण करती हुई युधिष्ठिर से कहती है कि ''इन्द्र समान पराक्रमशाली जिस अर्जुन ने उत्तर कुरु को विजित कर आपको अत्यधिक धन समर्पित किया, वही अर्जुन आज आपको वल्कल वस्त्र पहनने के लिए देते हैं। ऐसी अवस्था को प्राप्त वह अर्जुन शत्रुओं के प्रति आपके क्रोध को क्यों नहीं बढ़ाते हैं–

''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुन्तरान्कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः।
स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः।।

विशेषतः उल्लेखनीय है कि उक्त प्रसंग में महाभारत एवं किरातार्जुनीयम् दोनों ही ग्रन्थों में 'क्रोध' के लिए 'मन्यु' पद प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार भारवि प्रणीत काव्य पर शिवपुराण का भी किंचित् प्रभाव परिलक्षित होता है। व्यास की आज्ञानुसार जब अर्जुन इन्द्रकील प्रस्थान को तत्पर होते हैं, तब द्रौपदी अर्जुन से कहती हैं कि, व्यास जी ने आपको जो उपदेश दिया है, उसे प्रयत्नपूर्वक पूर्ण करो, आपका मार्ग शुभ हो एवं भगवान शंकर आपका कल्याण करें। ऐसे ही मृदु शब्दों का प्रयोग किरातार्जुनीयम् की द्रौपदी भी करती है–''महर्षि व्यास के आदेश का पालन करते हुए हमारे मनोरथों को सफल करो। तपस्यापूर्ति पर मैं तुम्हारा आलिंगन करूँगी।

पुनश्च, अन्यान्य वर्णनों एवं भावों की साम्यता के विपरीत किरातार्जुनीयम् की भाषा–शैली अपने उपजीव्य ग्रन्थों से प्रायः भिन्न ही है। भारवि की द्रौपदी ने व्यंजना प्रधान भावों का प्रयोग किया है। इसी प्रकार महाभारत एवं भारवि के भीम में भी पर्याप्त अन्तर है। महाभारत के भीम युद्धोद्यत प्रवृत्ति के प्रतीत होते हैं। किं वा वे युधिष्ठिर की भर्त्सना भी करते हैं, सत्य, धर्म तथा निष्ठा से उत्पन्न वैराग्य के कारण शान्तचित्त युधिष्ठिर को वे नपुंसक तक कह देते हैं, जबकि भारवि के भीम राजनीति–विशारद प्रतीत होते हैं, जो कारण–कार्य प्रभाव के सम्बन्ध को भली–भाँति समझते हैं। राजा के धन एवं बल की वृद्धि हेते निर्दिष्ट राजनीति सम्मत कार्यसिद्धि के पंचागों से वे सुपरिचित है–**''प्रभवः खुल कोशदण्डयोः कृतपञ्चाङ्.गविनिर्णयो नयः।।** पंचाग की व्याख्या करते हुए कामन्दक ने कहा है–

''सहायाः साधनोपाया विभागोदेशकालयोः।
विनिपातप्रतीकारः सिद्धिः पञ्चाङ्.गमिष्यते।।''

किरातार्जुनीयम् में अनुगुम्फित उपर्युक्त विशिष्टताओं के शास्त्रीय आलोक में अनुशीलन से स्वतः स्पष्ट है कि भारवि ने अर्जुन द्वारा पाशुपत अस्त्र प्राप्ति के निमित्त किये गये पुरुषार्थ से सम्बद्ध परम्परागत रूप में प्राप्त कथा प्रसंग का अपनी विशिष्ट प्रतिभा से सर्वथा नवीन अलंकरण करते हुये संस्कृत साहित्य परम्परा में एक अभूतपूर्व ग्रन्थ रत्न के रूप में उद्घाटन किया है।

संदर्भः–

1.''एकेन वर्णेन रसेनचाम्भश्चयुतं नभस्तो वसुधाविशेषात्।
नानारसत्वं बहुवर्णतां च गतं परीक्ष्यं क्षितितुल्यमेव।।'' बृहत्संहिता 54–2

2.इति श्रीमहाभारते शतसाहस्त्र्यां संहितायां वैयासिक्यामारण्यपर्वणि कैरातपर्वणि मुनिशंकरसंवादेऽष्टत्रिंशोध्यायः।।

3.(क) ''कैरातंवेषमास्थाय काञ्चनद्रुमसन्निभम्।
विभ्राजमानो वपुषा गिरिर्मेरुरिवापरः।।'' म.भा.व.प.–39/2

(ख) ''किरातवेषसंछन्नः स्त्रीभिश्चापि सहस्रशः।
अशोभत तदा राजन्स देशोऽतीव भारत।।–म.भा.व.प.–39/5

4.''इति श्री शिवमहापुराणे तृतीयायां शतरूद्र संहितायां। किरातावतारवर्णने भिल्लार्जुनसंवादोनाम चत्वारिंशोऽध्यायः।।''शि0पु0 अध्याय–40

5.''ततस्ते प्रययुः सर्वे पाण्डवा धर्मचारिणः।
ब्राह्मणैर्बहुभिः सार्धं पुण्यं द्वैतवनं सरः।।–म.भा.व.प.–24/13

6.शिवपुराण रु0सं0–अध्याय–37–41

7.''पाण्डवा अथ भिल्लं च प्रेषयामासुरोजसा।
गुणानां च परीक्षार्थं तस्य दुर्योधनस्य च।।''– शि0पु0 रुद्र संहिता–37/18

8.''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्.क्त वेदितुम्।
स वर्णिलिङ्.गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचर।।''–किरातार्जुनीयम्–1/1

9.म0भा0व0प0–27/10

10.किरात.–1/38

11.द्रष्टव्य–म0भा0व0प0–27/22 एवं किरात0–1/34

12.म0भा0व0प0–28/28

13तदेव–28/27

14.किरात0–1 / 35

15.''व्यासोपदिष्टं यद्राजंस्त्वया कार्यं प्रयत्नतः।

शुभप्रदोऽस्तु ते पन्थाश्शकंरश्शड्.करोतु वै।।– शि0पु0 रु0सं0–38 / 6

16.''भवान् धर्मो धर्म इति सततं व्रतकर्शितः।

कच्चिद् राजन् न निर्वेदादापन्नः क्लीबजीविकाम्।।–म0भा0व0प0–33 / 13

17.किरात0–2 / 12

18.का0 नी0–12 / 7 / 36